

# भारतीय चित्रकला

गोपालकृष्ण



मदनी चैत्रोत्सव जा पुनियहस्थ जंघनिते की यो  
 संचलियो वरुस्थल उपजे वनवास मस्तक हरे चो संग्यास  
 नाते सकल पिता मे एक मोते उपजे सकल सनेक जा  
 रे सोसो सब बंधन बिखरि जाना अंगुते नो उपज्यो त्यो त्यो ताकी लहा  
 निपज्यो उच्यो तेजे उच्यो नीचि अंगुते सो नीचो तिन के बड विधि  
 ये सब जा बा ताते उ अनाम जाव समदमसत्य सो पा सदा



७५ ई. मा.  
 गोपालकृष्ण